# उपसंहार

हमारा भारतीय समाज पितृसत्तात्मक होने की वजह से सदैव स्त्री विरोधी ही रहा है। वैदिक युग से ही उसने स्त्री को नाना प्रकार के बंधनों में जकड़ के रखा साथ ही उसका शारीरिक और मानसिक रूप से शोषण भी किया। उसने स्त्रियों को कभी देवी के रूप मे पूजा तो कभी उसे दानवी कहकर दुत्कारा। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्रियों को केवल उपभोग की वस्तु समझा, उसके स्वतंत्र अस्तित्व को कभी स्वीकार ही नही किया। सारे नियम-कानून उसने अपने हिसाब से गढ़े ताकि स्त्रियों को गुलाम बना कर रखा जा सके। 19 वीं सदी में स्त्री चेतना में जागरूकता आने के फलस्वरूप नारीवादी चिंतकों ने इस व्यवस्था के खिलाफ जोरदार ढंग से अपनी आवाज बुलंद की। इन चिंतकों ने स्त्री की दोयम दर्जे की पीड़ा को बखूबी समझा और स्त्री-मुक्ति के लिए संघर्ष किया।

पितृसत्ता, विवाह, लिंग, जाति, धर्म, अर्थ और राजनीति ये कुछ एसे प्रश्न हैं जिनसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से स्त्रियाँ शोषित होती हैं। इन प्रश्नों से मुक्ति ही स्त्री-मुक्ति है। स्त्री-मुक्ति का संघर्ष दरअसल एक ऐसी समाज व्यवस्था के लिए संघर्ष है जिसमें बराबरी हासिल करने की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ मौजूद हों और जिसमें उन्हें मनुष्य रूप में स्वीकारा जाए। स्त्री-अस्मिता की लड़ाई आधी दुनिया को मनुष्य का दर्जा दिलाने की लड़ाई है।

स्त्री-मुक्ति के संघर्ष में स्त्री आत्मकथाओं की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अब तक पुरुष द्वारा किए जाने वाले जिन अत्याचारों पर उसकी जुबान लज्जावश सीली रहती थी, पुरुष के जिन अनाचारों को उसका अपराध माना जाता था, उन पर स्त्री ने साहसपूर्वक बोलना शुरू किया। यह बदलते युग के साथ उसके अर्जित साहस व आत्मविश्वास का परिचायक है। स्त्री आत्मकथाकारों की लड़ाई पितृसत्तात्मक व्यवस्था से है जिसके कारण स्त्रियाँ सदियों से शोषित, उत्पीड़ित होती

चली आ रही हैं। इस व्यवस्था में परिवर्तन की माँग सभी स्त्री आत्मकथाओं में दिखाई देती है लेकिन स्वतंत्रता पूर्व की कथा लेखिका चंद्रकिरण सौनरेक्सा की आत्मकथा 'पिंजरे की मैना' में एक भिन्न प्रकार का स्त्री संघर्ष दिखाई देता है। यह संघर्ष पितृसत्तात्मक व्यवस्था के विरुद्ध जितना वाह्य है उससे कहीं ज्यादा मानसिक। इन्होंने अपनी आत्मकथा में जिस ईमानदारी के साथ पारिवारिक-संघर्षों को खोला है वह अन्यत्र दुर्लभ है। यह पारिवारिक-संघर्ष केवल चंद्रकिरण सौनरेक्सा का न हो कर बल्कि संपूर्ण मध्यवर्गीय परिवार की स्त्री का संघर्ष प्रतीत होता है। पति के जिन अत्याचारों, मानसिक शोषणों को सहते हुए परिवार और लेखन में सामंजस्य बनाए रखा वह अद्भुत है। अपने मध्यवर्गीय संस्कार के कारण वे अपने पति का विरोध नहींकर पाती जिसकी वजह से पति का अत्याचार इनके ऊपर बढ़ता ही गया। पति की रसिक प्रवृत्ति और लंपटता को इसलिए माफ करती चलती हैं कि उसके लिए परिवार की मर्यादा, पारिवारिक ढाँचे की सुरक्षा सर्वोपरि है।

चंद्रकिरण सौनरेक्सा ने जिस तरह से तत्कालीन औपनिवेशिक शासन व्यवस्था में प्रचलित शोषण, उत्पीड़न तथा सामंती रूढ़ियों और रिवाजों को तोड़ा वह अद्भुत साहस का परिचायक है। लेखिका स्त्री अधिकारों की बात तो नहीं करती लेकिन जिस ढंग से अपनी पारिवारिक त्रासदी को व्यक्त किया है, वह कई प्रश्नों को जन्म देता है।

घर और बाहर का सामंजस्य पिछली पीढ़ी की औरतों ने कैसे बखूबी निभाया है यह कोई चंद्रकिरण सौनरेक्सा से समझ सकता है पिछली पीढ़ी में तमाम पौरुषीय कृत्यों के बावजूद कैसे और क्यों शादियाँ टिकी रहती थीं और किस कीमत पर...यह आज की नारी के लिए आदर्श हो सकता है।